चौपाल

महानगरों के सफल पेशेवरों की एक प्रेरक पहल

डा मोनिका पुरी

चौपाल से जुड़े पेशेवर लोग विभिन्न क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, कृषि, समाज विज्ञान, प्रबंधन, तकनीक आदि में काम करते हुए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के ग्रामीणों के जीवन में एक सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास कर रहे हैं।

'चौपाल' महानगरों में काम कर रहे ऐसे पेशेवर लोगों का समूह है जो अपने-अपने क्षेत्र में सफलता की ऊंचाइयों को छूने के बाद अब समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाना चाहते हैं। दिल्ली के राममनोहर लोहिया अस्पताल में सेवारत डा आर.एस. टोंक के नेतृत्व में शुरू हुई इस पहल के सभी सदस्यों का एक ही ध्येय है,''कैरियर में ऊंचाइयों को छूने के बावजूद हमें अपनी जड़ों को नहीं भूलना चाहिए। जिस समाज ने हम पर अनेक उपकार किए हैं उसका ऋण हमें चुकाना है।'' डा टोंक 35 साल से वरिष्ठ मेडिसिन सलाहकार हैं और अपना जीवन गरीब और कमजोर लोगों की सेवा में लगा रहे हैं। यही कारण है कि विदेश तथा निजि क्षेत्रों से लुभावने प्रस्ताव मिलने के बावजूद उन्होंने सरकारी सेवा को जारी रखा।

चौपाल से जुड़े लोग विभिन्न क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, कृषि, समाज विज्ञान, प्रबंधन, तकनीक आदि में काम करते हुए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के ग्रामीणों के जीवन में एक सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास कर रहे हैं। अपनी गतिविधियों में इन्होंने सामुदायिक विकास के विभिन्न विषयों जैसे स्वास्थ्य, स्वच्छता, कृषि, पशु चिकित्सा तथा कन्या भ्रूणहत्या, नशे की लत, महिला सशक्तिकरण, समाज के वंचित एवं अभावग्रस्त लोगों का शिक्षा के माध्यम से सशक्तिकरण आदि को शामिल किया है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए चौपाल द्वारा सप्ताह के अन्त में शिविर आयोजित किये जाते हैं।

हरियाणा के सोनीपत जिले में असाध्य रोगों से पीड़ित ग्रामीणों की प्रारम्भिक चिकित्सकीय मदद के साथ-साथ आगे के इलाज की व्यवस्था करने तथा भविष्य में वे बीमारियों की चपेट में कम आएं इसके लिए उन्हें जागरुक करने का प्रयास किया जा रहा है। संस्था के कार्यकर्ता ग्रामीणों की सामान्य बीमारियों की पहचान करके उनका इलाज करते हैं। साथ ही जनजागरुकता के लिए जनचेतना रैलियों आदि का भी आयोजन किया जाता है। जनचेतना कार्यक्रम के दौरान विशेष जोर राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों पर होता है।

शिविर के दौरान चौपाल की टीम में फिजीशियन, चैस्ट फिजीशियन, बाल रोग विशेषज्ञ, स्त्री रोग विशेषज्ञ, मनोरोग विशेषज्ञ, साइकॉलोजिस्ट, नेत्र विशेषज्ञ, दंतरोग विशेषज्ञ, रेडियालॉजिस्ट, फॉर्माशिस्ट, ऑपटोमैट्रिस्ट, ईसीजी मशीन, अल्ट्रासाउंड मशीन, रक्त आदि की जांच की व्यवस्था होती है। संस्था के कार्यकर्ता जिन ग्रामों में नियमित प्रवास करते हैं उनमें शामिल हैं नाहरा, मंडौरा, दखौरा, लोहारेडी, बहादुरगढ़, जाखौदा, जसोरी, खेडी, निलौठी, सेहरी, खांडा, भडाना, बिन्दलान, मोहम्मदाबाद, फतेहपुर, थाना, रोहट, झरोठ, झरोठी, हरसाना, भालवा, बैयापुर, लहराडा, कक्रोई आदि। इस प्रयास के तहत साढ़े तीन से चार लाख जनसंख्या तक पहुंचने का प्रयास किया गया है। इसके अलावा इस क्षेत्र के करीब 50 स्कूलों में जाकर उनके करीब 16000 विद्यार्थियों को भी इस अभियान से जोड़ने का प्रयास हुआ है। चौपाल द्वारा आयोजित प्रत्येक शिविर में करीब 400 मरीजों का परीक्षण कर उन्हें दवाई तथा आवश्यक सलाह प्रदान की जाती है।

देश का यह हिस्सा भले ही अतिरिक्त खाद्यान्न एवं दुग्ध उत्पादन के लिए विख्यात हो, लेकिन यहां की समस्याओं में कुपोषण एक प्रमुख स्वास्थ्य समस्या है। यह एक अजीब विरोधाभास है। खेत और घर का अधिकांश उत्पादन परिवार की आय बढ़ाने के लिए बेच दिया जाता है और व्यक्ति उपभोग के लिए बहुत ही कम रखा जाता

चौपाल द्वारा आयोजित स्वास्थ्य शिविर में ग्रामीणों से संवाद करते हुए डा आर.एस. टोंक

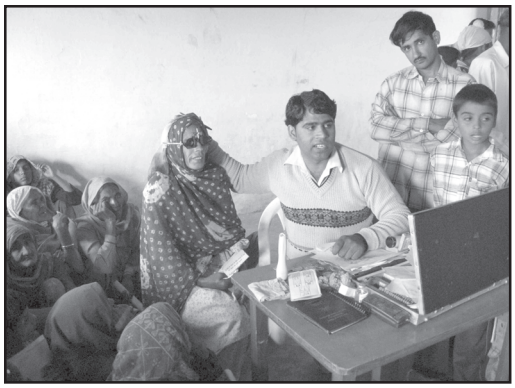

नेत्र विशेषज्ञ शिविर में नेत्र परीक्षण करते हुए

है, जिसका दुष्परिणाम कुपोषण के रूप में सामने आता है। चौपाल लोगों को जागरुक कर उन्हें कुपोषण से लड़ने के लिए प्रेरित करता है। संस्था के कार्यकर्ता सही पोषण की जानकारी देते हैं और साथ ही कुपोषण के लक्षणों की पहचान करने के तरीके भी ग्रामीणों को बताये जाते हैं। इसके अलावा मरीजों को आवश्यक खनिज तत्वों तथा विटामिनों के सम्पूरक भी प्रदान किये जाते हैं। जिनके पेट में कीड़े पाये जाते हैं उन्हें इसकी दवा दी जाती है।

मानसिक स्वास्थ्य एक ऐसा सामान्य असंक्रामक रोग है जो 20 प्रतिशत से भी अधिक मरीजों को प्रभावित करता है। इसका बहुत अधिक फैलाव होने के बावजूद बहुत ही कम लोगों को इसका इलाज उपलब्ध हो पाता है। जिन मरीजों का इलाज नहीं हो पाता वे इस बीमारी को सहते हुए ही जीवन से संघर्ष करते रहते हैं। चौपाल ने इस बीमारी को अपनी पहुंच के दायरे में लाने की पहल की है। इसकी स्वास्थ्य टीम में इस बीमारी का इलाज करने वाले प्रशिक्षित चिकित्सक तथा स्वास्थ्यकर्मी हैं जो समाज को मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में जागरुक करते हैं। वे मरीजों का परीक्षण कर उन्हें दवाई उपलब्ध कराते हैं। साथ ही इस बीमारी से लड़ने की कला भी सिखाते हैं। चौपाल का मानना है कि मरीजों को इलाज उपलब्ध कराना न केवल इस बीमारी पर नियंत्रण पाने के लिए जरूरी है, बल्कि इससे मनोविकार से ग्रस्त लोगों की जिंदगी बेहतर होती

डा. कुलबीर और डा अतुल शिविर में अल्ट्रासाउंड करते हुए

है और समाज को भी एकजुट करने का अवसर मिलता है, जो चौपाल का अंतिम लक्ष्य है।

इस क्षेत्र में जंगली घास, जिसे आम बोलचाल में 'कांग्रेस घास' कहा जाता है, बहुत अधिक मात्रा में पैदा होती है। यह खरपतवार खासतौर से आस्ट्रेलिया से आयात किये गये गेहूं के साथ आई है। यह विभिन्न त्वचा रोगों तथा वायु में फैलने वाले संक्रामक रोगों का कारण बनती है। एक बार इस बीमारी की चपेट में आये परिवार पर इसके कारण बडा आर्थिक बोझ पड़ जाता है। इसकी श्वसन क्रिया तथा कृत्रिम साधनों से जांच की जाती है। पिछले कुछ समय से समाज को साथ लेकर इस खतरनाक खरपतवार को या तो मिट्टी में दबा दिया जाता है या फिर जला दिया जाता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में हुक्के का चलन बहुत ज्यादा है। चूंकि धूम्रपान बहुत बीमारियों का कारण बनता है इसलिए इसके नुकसान से लोगों को जागरुक किया जाता है। कृषि तथा पशुचिकित्सकों की मदद से चौपाल के कार्यकर्ता किसानों को खेतों में अधिक से अधिक पैदावार लेने के लिए प्रेरित तथा प्रशिक्षित करते हैं। इससे न केवल उनकी आय में वृद्धि होती है, बल्कि उनके जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को दोहरा जीवन जीना पड़ता है। घर और खेत का काम करने के बावजूद उन्हें अनेक पारिवारिक बंधनों में बांधकर रखा जाता है और उनके समक्ष हमेशा आर्थिक तंगी रहती है। इसके अलावा उनकी सामाजिक तथा चिकित्सकीय आवश्यकताएं पुरुषों से भिन्न हैं। इसलिए चौपाल ने उनकी विशेष सहायता के लिए कुछ सामाजिक वैज्ञानिकों को नियुक्त किया है।

चूंकि धूम्रपान बहुत बीमारियों का कारण बनता है इसलिए इसके नुकसान से लोगों को जागरुक किया जाता है। कृषि तथा पशुचिकित्सकों की मदद से चौपाल के कार्यकर्ता किसानों को खेतों में अधिक पैदावार लेने के लिए प्रशिक्षित करते हैं।

डा मोनिका पुरी महिलाओं को स्वास्थ्य रक्षा के उपाय बताते हुए

चौपाल का लक्ष्य सोनीपत जिले के बैयांपुर गांव में आधुनिक सुविधाओं से युक्त एक सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित करना है। यह केन्द्र आसपास के 50 गांवों के करीब डेढ़ लाख लोगों की चिकित्सा जरूरतों को पूरा करेगा। इस केन्द्र में अनुभवी चिकित्सकों के अलावा आधुनिक मशीनों की मदद से मरीजों का इलाज किया जाएगा।

इसके अलावा स्कूली बच्चों के लिए भी कुछ कार्यक्रम शुरू करने की योजना है जिसके तहत सभी स्कूली बच्चों को हेल्थ कार्ड दिये जाएंगे। उस कार्ड में उनकी पोषण सूची तथा बीमारियों की जांच दर्शायी जाएगी। इसके अलावा बच्चों को उन बातों के बारे में भी प्रशिक्षित किया जाएगा, जिसमें स्वास्थ्य कार्यक्रमों को बढ़ावा मिले तथा बीमारियों की रोकथाम में सहायता हो।

(लेखिका चौपाल की संचालिका हैं।)

चौपाल का लक्ष्य सोनीपत जिले के बैयांपुर गांव में आधुनिक सुविधाओं से युक्त एक सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित करना भी है।